ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 121-125**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

स्वतंत्रता आन्दोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भूमिकाः एक पुनरावलोकन

डॉ0 चन्द्र किशोर शास्त्री

सहायक आचार्य–संस्कृत विभाग, ब्रह्मावर्त पी.जी.कॉलेज,मन्धना, कानपुर नगर (उ0प्र0) भारत

Received-07.07.2024, Revised-13.07.2024, Accepted-18.07.2024 **E-mail : drck.kn10@gmail.com**

सारांशः ***भारत के राष्ट्रपिता कहे जाने वाले महात्मा गाँधी, भारतीय इतिहास के उन महान व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने अपने त्याग, संघर्ष और बलिदान से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। गाँधी जी सत्य और अहिंसा की राह पर चलते हुए कई स्वतंत्रता आन्दोलन जैसे– असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ों आन्दोलन आदि का नेतृत्व किया। इन आन्दोलनों में लाखों भारतीयों ने हिस्सा लिया और ब्रिटिश शासन का विरोध किया। महात्मा गाँधी के नाम से मशहूर मोहनदास करमचंद गाँधी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक नेता थे। सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तों पर चलकर उन्होंने भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन सिद्धांतों ने पूरी दुनिया में लोगों को नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिये प्रेरित किया।***

कुंजीभूत शब्द– स्वतंत्रता आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, अहिंसा,

प्रस्तावनाः मोहनदास करमचन्द गाँधी, जिन्हें महात्मा गाँधी के नाम से भी जाना जाता है, भारत एवं भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार करने के समर्थक अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी, जिसने भारत सहित पूरे विश्व में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें संसार में साधारण जनता महात्मा गाँधी के नाम से जानती है। राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गाँधी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपने जीवन में सत्य,अहिंसा और सच्चाई के रास्ते पर चलकर एक ऐसा जन आन्दोलन खड़ा कर दिया, जिसके आगे अंग्रेज भाग खड़े हुए। गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आदि आंदोलनों का नेतृत्व किया। इन आंदोलनों में लाखों भारतीयों ने हिस्सा लेकर ब्रिटिश शासन का विरोध किया।

मोहनदास करम चन्द गांधी (जन्मः 2 अक्टूबर 1869 – निधनः 30 जनवरी 1948) जिन्हें महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, भारत एवं भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार करने के समर्थक अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी, जिसने भारत सहित पूरे विश्व में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें संसार में साधारण जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा 'महान आत्मा' एक सम्मान सूचक शब्द है। गांधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया था। एक अन्य मत के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने 1915 मे महात्मा की उपाधि दी थी। तीसरा मत ये है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर/टैगोर ने 12 अप्रैल, 1919 को अपने एक लेख में उन्हें महात्मा कहकर सम्बोधित किया था।[1] उन्हें बापू (गुजराती भाषा में बापू अर्थात् पिता) के नाम से भी स्मरण किया जाता है। एक मत के अनुसार गांधीजी को बापू सम्बोधित करने वाले प्रथम व्यक्ति उनके साबरमती आश्रम के शिष्य थे। सुभाष चन्द्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से गांधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं थीं।[2] प्रति वर्ष 02 अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गांधी जयन्ती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष (1916–45)– गाँधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आए। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन उनके विचार भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले पर ही आधारित थे, जो एक सम्मानित नेता थे।

चंपारण और खेड़ा सत्याग्रह – गाँधी की पहली बड़ी उपलब्धि1918 में चम्पारन सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह में मिली। हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नील (indigo) नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आन्दोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया, जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गाँवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर (unhygienic); और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा (Khed), गुजरात में भी यही समस्या थी। गाँधी जी ने वहाँ एक आश्रम बनाया, जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गाँवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गाँवों की सफाई करने से आरम्भ किया, जिसके अन्तर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।[3]

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

लेकिन इसके प्रमुख प्रभाव उस समय देखने को मिले जब उन्हें अशांति फैलाने के लिए पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन्हें प्रान्त छोड़ने के लिए आदेश दिया गया। हजारों की तादाद में लोगों ने विरोध प्रदर्शन किए और जेल, पुलिस स्टेशन एवं अदालतों के बाहर रैलियां निकालकर गाँधी जी को बिना शर्त रिहा करने की मांग की। गाँधी जी ने जमींदारों के खिलाफ़ विरोध प्रदर्शन और हड़तालों का नेतृत्व किया, जिन्होंने अंग्रेजी सरकार के मार्गदर्शन में उस क्षेत्र के गरीब किसानों को अधिक क्षतिपूर्ति मंजूर करने तथा खेती पर नियंत्रण, राजस्व में बढोतरी को रद्द करना तथा इसे संग्रहित करने वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस संघर्ष के दौरान ही, गाँधी जी को जनता ने बापू/पिता और महात्मा (महान आत्मा) के नाम से संबोधित किया। खेड़ा में सरदार पटेल ने अंग्रेजों के साथ विचार विमर्श के लिए किसानों का नेतृत्व किया, जिसमें अंग्रेजों ने राजस्व संग्रहण से मुक्ति देकर सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया था। इसके परिणामस्वरूप,गांधी की ख्याति देश भर में फैल गई।[4]

असहयोग आन्दोलन – गाँधी जी ने असहयोग,अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ़ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फौजों द्वारा भारतीयों पर जलियावांला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है, ने देश को भारी आघात पहुँचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। दिसम्बर,1921 में गाँधी जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया। उनके नेतृत्व में कांग्रेस को स्वराज के नाम वाले एक नए उद्देश्य के साथ संगठित किया गया। पार्टी में सदस्यता सांकेतिक शुल्क का भुगतान करने पर सभी के लिए खुली थी। पार्टी को किसी एक कुलीन संगठन की न बनाकर इसे राष्ट्रीय जनता की पार्टी बनाने के लिए, इसके अंदर अनुशासन में सुधार लाने के लिए एक पदसोपान समिति गठित की गई। गाँधी जी ने अपने अहिंसात्मक मंच को स्वदेशी नीति में शामिल करने के लिए विस्तार किया, जिसमें विदेशी वस्तुओं विशेषकर अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। इससे जुड़ने वाली उनकी वकालत का कहना था कि सभी भारतीय अंग्रेजों द्वारा बनाए वस्त्रों की अपेक्षा हमारे अपने लोगों द्वारा हाथ से बनाई गई खादी पहनें। गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन[5], को सहयोग देने के लिए पुरूषों और महिलाओं को प्रतिदिन खादी के लिए सूत कातने में समय बिताने के लिए कहा। यह अनुशासन और समर्पण लाने की ऐसी नीति थी जिससे अनिच्छा और महत्वाकांक्षा को दूर किया जा सके और इनके स्थान पर उस समय महिलाओं को शामिल किया जाए, जब ऐसे बहुत से विचार आने लगे कि इस प्रकार की गतिविधियां महिलाओं के लिए सम्मानजनक नहीं हैं। इसके अलावा गाँधी जी ने ब्रिटेन की शैक्षिक संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार और सरकारी नौकरियों को छोड़ने का तथा सरकार से प्राप्त तमगों और सम्मान (honours) को वापस लौटाने का भी अनुरोध किया।

असहयोग को दूर–दूर से अपील और सफलता मिली जिससे समाज के सभी वर्गों की जनता में जोश और भागीदारी बढ गई। फिर जैसे ही यह आंदोलन अपने शीर्ष पर पहुँचा वैसे फरवरी 1922 में इसका अंत चौरी–चौरा, उत्तरप्रदेश में भयानक द्वेष के रूप में अंत हुआ। आंदोलन द्वारा हिंसा का रूख अपनाने के डर को ध्यान में रखते हुए और इस पर विचार करते हुए कि इससे उसके सभी कार्यों पर पानी फिर जाएगा, गांधी जी ने व्यापक असहयोग के इस आंदोलन को वापस ले लिया।[6]

गाँधी जी के एकता वाले व्यक्तित्व के बिना इंडियन नेशनल कांग्रेस उसके जेल में दो साल रहने के दौरान ही दो दलों में बंटने लगी जिसके एक दल का नेतृत्व सदन में पार्टी की भागीदारी के पक्ष वाले चित्त रंजन दास तथा मोतीलाल नेहरू ने किया तो दूसरे दल का नेतृत्व इसके विपरीत चलने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। इसके अलावा, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अहिंसा आंदोलन की चरम सीमा पर पहुँचकर सहयोग टूट रहा था। गांधी जी ने इस खाई को बहुत से साधनों से भरने का प्रयास किया जिसमें उन्होंने 1924 की बसंत में सीमित सफलता दिलाने वाले तीन सप्ताह का उपवास करना भी शामिल था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह (नमक मार्च)– गाँधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता, शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आन्दोलन छेड़ते भी रहे। एक साल पहले 1928 में अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवैधानिक सुधार आयोग बनाया, जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसम्बर,1928 में गाँधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा, जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आन्दोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें।गाँधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चन्द्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरुषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया, बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल के बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। 31 दिसम्बर,1929 को लाहौर में भारत का झंडा फहराया गया था। 26 जनवरी, 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गाँधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया, जिसे 12 मार्च से 6 अप्रैल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया, ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था, जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।[7]

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

लार्ड एडवर्ड इरविन द्वारा प्रतिनिधित्व वाली सरकार ने गाँधी जी के साथ विचार विमर्श करने का निर्णय लिया। यह इरविन गाँधी की सन्धि मार्च, 1931 में हस्ताक्षर किए थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सभी राजनैतिक कैदियों को रिहा करने के लिए अपनी रजामन्दी दे दी। इस समझौते के परिणामस्वरूप गाँधी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में लंदन में आयोजित होने वाले गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया। यह सम्मेलन गाँधी जी और राष्ट्रीयवादी लोगों के लिए घोर निराशाजनक रहा, इसका कारण सत्ता का हस्तांतरण करने की बजाय भारतीय कीमतों एवं भारतीय अल्पसंख्यकों पर केन्द्रित होना था। इसके अलावा, लार्ड इरविन के उत्तराधिकारी लार्ड विलिंगटन, ने राष्ट्रवादियों के आंदोलन को नियंत्रित एवं कुचलने का एक नया अभियान आरम्भ कर दिया। गाँधी फिर से गिरफ्तार कर लिए गए और सरकार ने उनके अनुयाईयों को उनसे पूर्णतया दूर रखते हुए गाँधी जी द्वारा प्रभावित होने से रोकने की कोशिश की। लेकिन, यह युक्ति सफल नहीं थी।

दलित आंदोलन और निश्चय दिवस– 1932 में, दलित नेता और प्रकांड विद्वान डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर के चुनाव प्रचार के माध्यम से, सरकार ने अछूतों को एक नए संविधान के अंतर्गत अलग निर्वाचन मंजूर कर दिया। इसके विरोध में दलित हितों के विरोधी गाँधी जी ने सितंबर 1932 में छः दिन का अनशन ले लिया, जिसने सरकार को सफलतापूर्वक दलित से राजनैतिक नेता बने पलवंकर बालू द्वारा की गई मध्यस्ता वाली एक समान व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। अछूतों के जीवन को सुधारने के लिए गाँधी जी द्वारा चलाए गए इस अभियान की शुरुआत थी। गाँधी जी ने इन अछूतों को हरिजन का नाम दिया जिन्हें वे भगवान् की संतान मानते थे। 8 मई,1933 को गाँधी जी ने हरिजन आन्दोलन में मदद करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का 21 दिन तक चलने वाला उपवास किया। यह नया अभियान दलितों को पसंद नहीं आया तथापि वे एक प्रमुख नेता बने रहे। डॉ० अम्बेडकर ने गाँधी जी द्वारा हरिजन शब्द का उपयोग करने की स्पष्ट निंदा की, कि दलित सामाजिक रूप से अपरिपक्व हैं और सुविधासंपन्न जाति वाले भारतीयों ने पितृसत्तात्मक भूमिका निभाई है। अम्बेडकर और उसके सहयोगी दलों को भी महसूस हुआ कि गाँधी जी दलितों के राजनीतिक अधिकारों को कम आंक रहे हैं। हालांकि गाँधी जी एक वैश्य जाति में पैदा हुए फिर भी उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि वह डॉ० अम्बेडकर जैसे दलित मसीहा के होते हुए भी दलितों के लिए आवाज उठा सकते हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दुस्तान की सामाजिक बुराइयों में छुआछूत एक प्रमुख बुराई थी, जिसके के विरुद्ध महात्मा गाँधी और उनके अनुयायी संघर्षरत रहते थे। उस समय देश के प्रमुख मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित था। केरल राज्य का जनपद त्रिशुर दक्षिण भारत की एक प्रमुख धार्मिक नगरी है। यहीं एक प्रतिष्ठित मंदिर है गुरुवायुर मंदिर, जिसमें कृष्ण भगवान् के बालरूप के दर्शन कराती भगवान् गुरूवायुरप्पन की मूर्ति स्थापित है। आजादी से पूर्व अन्य मंदिरों की भांति इस मंदिर में भी हरिजनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध था।[8]

केरल के गाँधी समर्थक श्री केलप्पन ने महात्मा की आज्ञा से इस प्रथा के विरुद्ध आवाज उठायी और अंततः इसके लिये सन् 1933 ई. में सविनय अवज्ञा प्रारम्भ की गयी। मन्दिर के ट्रस्टियों को इस बात की ताकीद की गयी कि नये वर्ष का प्रथम दिवस अर्थात 1 जनवरी,1934 को अंतिम निश्चय दिवस के रूप में मनाया जायेगा और इस तिथि पर उनके स्तर से कोई निश्चय न होने की स्थिति मे महात्मा गाँधी तथा श्री केलप्पन द्वारा आन्दोलनकारियों के पक्ष में आमरण अनशन किया जा सकता है। इस कारण गुरूवायूर मन्दिर के ट्रस्टियो की ओर से बैठक बुलाकर मन्दिर के उपासको की राय भी प्राप्त की गयी। बैठक मे 77 प्रतिशत उपासको के द्वारा दिये गये बहुमत के आधार पर मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश को स्वीकृति दे दी गयी और इस प्रकार 1जनवरी, 1934 से केरल के श्री गुरूवायूर मन्दिर में किये गये निश्चय दिवस की सफलता के रूप में हरिजनों के प्रवेश को सैद्वांतिक स्वीकृति मिल गयी। गुरूवायूर मन्दिर जिसमें आज भी गैर हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है तथापि कई धर्मों को मानने वाले भगवान् गुरूवायूरप्पन के परम भक्त हैं।[9]

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो आन्दोलन– द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़े (नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड) तो आरम्भ में गाँधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया, किन्तु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों का परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गाँधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो, तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढता गया गाँधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गाँधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था, जो भारत देश से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गाँधी जी के दूसरे नम्बर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है, जबकि कुछ मानते थे कि गाँधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं।

भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आन्दोलन बन गया, जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख्या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गाँधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे, तब तक भारत को तत्काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा, यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।[10]

गाँधी जी और कांग्रेस कार्यकारणी समिति के सभी सदस्यों को अंग्रेजों द्वारा मुबंई में 9 अगस्त,1942 को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधी जी को पुणे के आंगा खाँ महल में दो साल तक बंदी बनाकर रखा गया। यही वह समय था जब गाँधी जी को उनके निजी जीवन में दो गहरे आघात लगे। उनका 50 साल पुराना सचिव महादेव देसाई 6 दिन बाद ही दिल का दौरा पड़ने से मर गए और गाँधी जी के 18 महीने जेल में रहने के बाद 22 फरवरी,1944 को उनकी पत्नी कस्तूरबा गाँधी का देहांत हो गया। इसके छः सप्ताह बाद गाँधी जी को भी मलेरिया का भयंकर शिकार होना पड़ा। उनके खराब स्वास्थ्य और जरूरी उपचार के कारण 6 मई,1944 को युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही उन्हें रिहा कर दिया गया। अंग्रेज उन्हें जेल में दम तोड़ते हुए नहीं देखना चाहते थे, जिससे देश का क्रोध बढ़ जाए।

हालांकि भारत छोड़ो आंदोलन को अपने उद्देश्य में आशिंक सफलता ही मिली, लेकिन आंदोलन को निष्ठुर दमन ने 1943 के अंत तक भारत को संगठित कर दिया। युद्ध के अंत में, ब्रिटिश ने स्पष्ट संकेत दे दिया था कि सत्ता का हस्तांतरण कर उसे भारतीयों के हाथ में सौंप दिया जाएगा। इस समय गाँधी जी ने आन्दोलन को बंद कर दिया, जिससे कांग्रेसी नेताओं सहित लगभग 100000 राजनैतिक बंदियों को रिहा कर दिया गया।

गाँधी जी की आलोचना – गाँधी के सिद्धान्तों और करनी को लेकर प्रायः उनकी आलोचना भी की जाती है। उनकी आलोचना के मुख्य बिन्दु हैं :

1. जुलु विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देना ।
2. दोनो विश्वयुद्धों में अंग्रेजों का साथ देना।
3. खिलाफत आन्दोलन जैसे साम्प्रदायिक आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन बनाना।
4. अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्तिकारियों के हिंसात्मक कार्यों की निन्दा करना।
5. गाँधी–इरविन समझौता–जिससे भारतीय क्रन्तिकारी आन्दोलन को बहुत धक्का लगा।
6. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर सुभाष चन्द्र बोस के चुनाव पर नाखुश होना।
7. चौरीचौरा काण्ड के बाद असहयोग आन्दोलन को सहसा रोक देना।
8. भारत की स्वतंत्रता के बाद नेहरू को प्रधानमंत्री का दावेदार बनाना।
9. स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने की जिद पर अनशन करना।
10. भीमराव आम्बेडकर, महात्मा गाँधी को जाति प्रथा का समर्थक समझते थे।

इन आलोचनाओं के बावजूद पण्डिता क्षमा देवी राव जो एक संस्कृत विद्वान थीं, (जिन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी और मराठी में कई ग्रंथ लिखे) ने वर्ष 1931 में 'सत्याग्रह गीता' लिखी। इस लेखन के पीछे प्रेरणा नमक सत्याग्रह– गाँधी जी का दांडी मार्च था। भगवद्गीता की तर्ज पर सत्याग्रह गीता में 18 अध्याय हैं। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण यह अद्भुत कार्य प्रकाशित नहीं हो सका। एक अन्य संस्कृत विद्वान सिल्वा लेवी की मदद से यह काव्य 1932 ई. में पेरिस से प्रकाशित हुआ। यह यूरोप से प्रकाशित होने वाला पहला प्रमुख संस्कृत काव्य था।

सत्याग्रहगीता के पहले पाँच अध्याय देश की तत्कालीन स्थिति का वर्णन करते हैं। आठवें अध्याय में, साइमन कमीशन और उसके खिलाफ़ भारतीयों की प्रतिक्रिया पर चर्चा की गई है। नौवें अध्याय में, वायसराय इरविन के घोषणापत्र की चर्चा है और दसवें अध्याय में, गांधीजी द्वारा वायसराय इरविन को लिखे गए पत्र का वर्णन है। ग्यारहवें अध्याय में, दांडी मार्च का विशद वर्णन है। इसके बाद, घटनाओं की श्रृंखला बारहवें अध्याय का निर्माण करती है। तेरहवें अध्याय में, उत्तर–पूर्व सीमांत प्रांत में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का विस्तार से वर्णन किया गया है। चौदहवें से सोलहवें अध्याय में, औपनिवेशिक शासन द्वारा किए गए विभिन्न अत्याचारों पर प्रकाश डाला गया है। सत्रहवें अध्याय में, हमारे देश की महिला स्वतंत्रता सेनानियों पर प्रकाश डाला गया है। सत्याग्रह गीता के अंतिम अध्याय में लेखिका ने गांधीजी के साथ अपनी मुलाकात का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।

निष्कर्ष– हम उन समस्त शूरवीरों, स्वतंत्रता सेनानियों,यथा–लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल,भगत सिंह, राजगुरु, वीर सावरकर, पंडित जवाहरलाल नेहरू और रानी लक्ष्मीबाई जैसी अनेक महिला स्वतंत्रता सेनानियों तथा अन्य कोटिशरू उन समस्त वीरों को नमन करते हैं, जिनके त्याग,संघर्ष और बलिदान के परिणाम स्वरूप आज हम स्वतंत्रता के खुले वातावरण में सांस ले रहे हैं। जिन्होंने अपने बलिदानों से भारतभूमि को स्वतंत्र कराने में अहम भूमिका निभाई है। उन्हीं महान् विभूतियों में से एक थे मोहनदास करमचंद गाँधी जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक नेता थे। जिन्होंने "सत्याग्रह और अहिंसा परमो धर्मः" के सिद्धान्तों पर चलकर भारत को आजादी दिलाने में अहम भूमिका निभाई। लाखों–करोड़ों भारतीयों को आन्दोलन से जोड़ा, उन्हें आन्दोलन का हिस्सा बनाया और अन्ततःअंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश किया।

यद्यपि कि गाँधी जी के कुछ निर्णयों के कारण उनकी आलोचनाएँ भी हो रही हैं, तथापि गाँधी जी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह आदि आन्दोलनों से प्रभावित होकर संस्कृत की परम विदुसी पण्डिता क्षमाराव द्वारा "सत्याग्रहगीता" जैसे महाकाव्य की रचना भी की जाती है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006), स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास, (संस्करण–1), नई दिल्लीः प्रवीण प्रकाशन, पृ०–107.
2. वही,पृ०–512.
3. https://hi-m-wikipedia-org/ wiki / महात्मा गाँधी।
4. वही
5. आरगाँधी, पटेल : एक जीवन,पृ.–89(https://hi-m-wikipedia-org/wiki / महात्मा गाँधी)।
6. वही, पृ.–105.
7. वही, पृ.–172.
8. वही, पृ.–230–32.
9. हरिभाउ उपाध्याय,बापू कथा–जीवन काल1920 से 1948(https://hi-m-wikipedia-org/wiki / महात्मा गाँधी)।
10. आरगाँधी, पटेल रू एक जीवन,पृ.–283–318 (https://hi-m-wikipedia-org/ wiki / महात्मा गाँधी)।

*****